Jh yky d".k vkMok.kh dk v/;{kh; Hkk"k.k
Hkkjrh; turk ikVh
jk"Vh; vf/ko'ku
28&30] 2005 eEcb

fe=k]

इतिहास में बिरले ही ऐसे संगठन हुए हैं, जिन्होंने प्रचंड बाधाओं से टकराते हुए बहुत से शिखरों को पार किया है और इतने छोटे कालखण्ड में जबरदस्त उपलब्धियाँ अर्जित की हैं। भारतीय जनता पार्टी के जन्म के रजत जयंती वर्ष को मनाने के लिए हम जो लोग यहां उपस्थित हुए हैं, उनके लिए यह वास्तव में महत्वपूर्ण अवसर है। यह उपलब्धि का क्षण है। यह अपूर्व सफलता का क्षण है। यह गौरवशाली क्षण है। लेकिन जब हम अपनी विलक्षण उपलब्धियों का उत्सव मना रहे हैं तब हमें इस अवसर पर नये भारत के निर्माण के कार्य के प्रति अपने को समर्पित भी करना है।

अपनी प्रिय मातृभूमि को विश्व में अतुलनीय दर्जा दिलाने के काम के नेतृत्व की जिम्मेदारी संभालते हुए और इतिहास द्वारा प्रस्तुत चुनौती को स्वीकार करते हुए हमारे गर्व में विनम्रता भी होनी चाहिए।

भारत को समतामय, जागृत और सशक्त समाज बनाने के परिवर्तन के उपकरण के रूप में भारतीय जनता पार्टी ने वर्षानुवर्ष अपने को ढाला है। हम लोग यहां इसलिए एकत्रित हुए हैं ताकि भारत को पूर्वाग्रहों की बेड़ियों से मुक्त कर सकें और गौरवशाली अतीत के साथ देदीत्यमान भविष्य को जोड़ सकें।

सांस्कृतिक राष्ट्रवादः जोड़ने वाली कड़ी

पांच हजार साल पुरानी सभ्यता के इतिहास में 25 साल मात्र एक टंकार ध्वनि जैसा कालखण्ड है। लेकिन भारतीय जनता पार्टी का इतिहास 1980 के इसके जन्म काल से ही प्रारम्भ नहीं होता। हमें महान परम्पराओं की विरासत मिली है। भारत वर्ष की सामूहिक स्मृति और प्रतिभा की विरासत मिली है। हम सातत्य के साथ परिवर्तन के प्रतीक हैं। आज के दौर में भारतीय जनता पार्टी उस भारतीय जनसंघ की विरासत लेकर आगे बढ़ी है, जिसकी स्थापना 1951 में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने की थी। वह न केवल भारतीय संविधान के प्रमुख निर्माताओं में थे, बल्कि पं. नेहरू के पहले मंत्रिमण्डल के महत्वपूर्ण सदस्य भी थे। हममें से बहुत से 1951 में ही राजनीति में सक्रिय हो गए थे, जब जनसंघ की स्थापना हुई थी।
भारतीय जनता पार्टी का जन्म 1980 में तब हुआ, जब जनता पार्टी के कुछ लोगों ने पूर्ववर्ती जनसंघ के नेताओं से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के साथ अपने सम्बंधों को समाप्त करने की मांग की थी। हमने इस मांग को पूरी तरह खारिज कर दिया, क्योंकि हमने सांस्कृतिक अधिष्ठान और राष्ट्रवादी प्रतिबद्धताएं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से ग्रहण की हैं। हमने इस सवाल पर जनता पार्टी से नाता तोड़ने का फैसला किया और व्यापक संघ परिवार के सहभागी बने रहे। स्वतंत्रता के पहले जब भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस एक जनांदोलन थी, न कि एक राजनैतिक दल तब कांग्रेस के अंदर ही परस्पर विरोधी अनेक धाराएं थी। समाजवादी थे, कम्युनिस्ट थे, उत्कट राष्ट्रवादी थे। सब के सब एक ही छत्र के नीचे काम करते थे। लेकिन जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में, विशेष रूप से 1947 के बाद, कांग्रेस भारत की सच्ची अस्मिता के रास्ते से भटक गई और सेक्युलरिज़्म की वामपंथी परिभाषा को क्रियान्वित करने लगी। और साथ ही भारत के आधारभूत सांस्कृतिक संयुक्तार्थ को अमान्य करने लगी और इसे भी कि वह संस्कृति हिन्दू है।

जैसाकि मैने पहले भी कई बार कहा है कि भारत एक स्वाभाविक रूप से पंथनिरपेक्ष समाज है क्योंकि इसकी संस्कृति हिन्दू लोकाचार से परिभाषित होती है जोकि सर्वोत्कृष्ट सेक्युलरवाद है। कांग्रेस के शासन काल में उत्तरोत्तर सेक्युलरवाद का विकृतिकरण होता रहा। जनसंघ और बाद में भारतीय जनता पार्टी उसका डट कर विरोध करते रहे। यह अतुलनीय समाधान का विषय है कि भारत के लोगों ने सेक्युलरवाद और साम्प्रदायिकता के विवाद में कांग्रेस और वामपंथियों की परिभाषा को बकवास माना। हाल में मैने थॉमस फ्रेडमैन की लिखी किताब ''द वर्ल्ड इज फ्लैट'' पढ़ी है। मैं उसमें से इस मुद्दे से सम्बंधित एक उद्धरण प्रस्तुत करना चाहूंगा :

"भारत में पकिस्तान से ज्यादा मुसलमान रहते हैं। यहां 15 करोड़ मुसलमान बसते हैं लेकिन 9/11 के संदर्भ में दिलचस्प तथ्य है। अलकायदा से ताल्लुक रखने वाले हम किसी भी भारतीय मुसलमान को नहीं जानते। 9/11 के बाद बने ग्वाटामाले जेल में भी कोई भारतीय मुसलमान नहीं है। इराक में जेहादियों के साथ–साथ लड़ने वालों में भी कोई भारतीय मुसलमान नहीं है। ऐसा क्यों है ? हम क्यों नहीं भारतीय मुसलमानों के बारे में ऐसा पढ़ते कि वह अपनी सभी समस्याओं के लिए अमेरिका को दोष देते हैं या ताजमहल या ब्रिटिश दूतावास पर हवाई जहाज दे मारते हैं। जबकि वह भारी हिन्दू वर्चस्व वाली भूमि में अल्पसंख्यक हैं। सब जानते हैं कि भारतीय मुसलमानों को भी पूंजी के अभाव और राजनैतिक प्रतिनिधित्व के सिलसिले में शिकायतें हैं। विभिन्न धर्मों के अनुयायियों के बीच कभी–कभी मजहबी संघर्ष हो जाते हैं। और उसके बड़े विनाशकारी परिणाम होते हैं। मुझको निश्चय ही लगता है कि 15 करोड़ मुसलमानों में कुछ ही कभी अलकायदा के रास्ते पर चलेगें। लेकिन यह कोई सहज प्रवृति नहीं होगी। क्यों ? भारत के संदर्भ में उत्तर साफ है। यह एक सेक्युलरवादी खुले बाजार वाला लोकतांत्रिक देश है। यहां पर अहिंसा की परम्परा और हिन्दू सहिष्णुता का भारी असर है।"

राष्ट्रीय बहस का मुद्दा

मित्रो, हम लोग स्वाभाविक रूप से अपने को बधाई दे सकते हैं क्योंकि हमने वामपंथियों के सेक्युलर बनाम साम्प्रदायिकता के वर्गीकरण का निर्णायक रूप से पर्दाफाश कर दिया। हम गर्व से यह दावा कर सकते हैं कि स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद भारतीय जनसंघ और भारतीय जनता पार्टी ने इसे राष्ट्रीय बहस का मुद्दा बनाया।

जम्मू–कश्मीर के संदर्भ में राष्ट्रीय एकात्मता के मुद्दे को लेकर जिस संघर्ष को डॉ. मुखर्जी ने शुरु किया था, उसे अधिनायकवाद के खिलाफ संघर्ष का रूप आपातकाल में दिया गया। बोफोर्स के खुलासे के बाद उच्च पद पर बैठे लोगों के भ्रष्टाचार के खिलाफ इसे आगे बढ़ाया गया। अल्पसंख्यकवाद और छद्म सेक्युलरवाद के कांग्रेसी और वामपंथी आचरण के विरूद्ध संघर्ष किया। और फिर विकास को सर्वोच्च मुद्दा बनाया। इसमें भारतीय राजनीति के विकास के विभिन्न चरणों में जनसंघ और भारतीय जनता पार्टी की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण रही। पिछले 50 वर्षों से भी ज्यादा के कालखण्डों में हमने बार–बार विकास के मुद्दे को उठाया जबकि बाकी पार्टियां विभाजनकारी विचारों की डुग्गी पीट रही थीं। जिससे जाति और समुदाय की निम्नगामी आदिम निष्ठाएं जागती हैं। जनता दल (यू) के गठबंधन के साथ हाल के बिहार में हुई जीत से भी यह बात साफ है कि बिजली, पानी, सड़क का मुद्दा जातिवाद पर भारी पड़ा। महत्वपूर्ण बात यह है कि भारतीय जनता पार्टी के निर्माण के साथ ही हमने सफलतापूर्वक भारतीय राजनीति को द्विध्रुवीय बनाया। पिछले दो दशकों में खासकर 1996 के चुनावों के बाद विभिन्न राजनैतिक दलों के गठबंधन कांग्रेस या भारतीय जनता पार्टी के आस–पास बने। इस उपलब्धियों के परिणाम को अनदेखा नहीं रहने देना चाहिए।

समकालीन भारतीय राजनीति को भाजपा ने आकार दिया

अनगिनत संघर्षों और अतुलनीय, त्याग, बलिदान से भारतीय जनता पार्टी बनी है। जिन उदाहरणों को मैने ऊपर गिनाया है उसके अलावा यह भारतीय जनता पार्टी ही थी जिसने जातीय युद्ध के कगार से भारत को बाहर निकाला और अयोध्या में रामजन्म भूमि मंदिर आंदोलन के जोड़ने वाले कार्यक्रम से उसे ऊपर उठाया। जब विभाजनकारी ताकतों ने भारत की अन्तर्निर्मित एकता को क्षत–विक्षत करने और एक के खिलाफ दूसरी जाति को भिड़ाने की तैयारी की, तब हमने सोमनाथ से अयोध्या तक की रथयात्रा से बिजली की गति से एकता का संचार किया। व्यक्तिगत रूप से मेरे लिए यह आँखें खोल देने वाला था। यात्रा के दौरान मैंने अनुभव किया कि भारत भर में परम्परा से लगाव की एक बड़ी चाहत है, उसे दिशा की जरूरत है। उसमें आधुनिकता की भूख है और परम्परा से लगाव भी। तब से लेकर मैने सारे देश की कई यात्राएं कीं। इन वर्षों में मैने राष्ट्रीय एकात्मता और सुशासन पर बल दिया। मुझे यह देख कर प्रसन्नता है कि आज यही मुद्दे आम लोगों की मुख्य इच्छाएं बन गई हैं।

मित्रो, दुर्भाग्य से हर भारतीय के हृदय में विराजमान भगवान श्री राम की महिमा के अनुरूप अयोध्या में मंदिर नहीं बन पाया है। भारतीय जनता पार्टी का यह मिशन तब तक अधूरा रहेगा, जब तक भगवान श्री रामजन्मभूमि पर भव्य मंदिर नहीं बन जाता। हममें से सब लोगों को इस मिशन के लिए फिर से संकल्पबद्ध होना होगा क्योंकि श्री राम न केवल धार्मिक प्रतीक हैं, बल्कि भारतीय लोकाचार, संस्कृति और एकता के प्रतीक हैं। वह सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की अवधारणा के प्रतीक हैं।

वाजपेयी सरकार के गौरवास्पद रिकॉर्ड

देश में रहने वाले हर भारतीय और देश के बाहर रहने वाले भारतीय मूल के लोग आज सिर ऊंचा उठाकर चलते हैं। इसका श्रेय राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सरकार की शुरू की गई क्रांतिकारी पहलों को जाता है। श्री वाजपेयी के नेतृत्व में राजग सरकार के बनते ही दो महीने के अन्दर पोखरण परीक्षण से दुनिया चकित हो गई। और इसने भारत को आणविक शक्ति बना दिया। राजग सरकार के दौरान ही सूचना प्रौद्योगिकी में क्रांति हुई।

बुनियादी ढांचे से वैसी उपलब्धियां हुईं आज उन सब को हम, ये तो हो गई, हम मानकर चलते हैं। लेकिन वह सब वास्तव में हमारी सरकार की अग्रगामी और प्रबुद्ध प्रतिबद्धताओं का परिणाम थीं। इसमें स्वर्णिम चतुर्भज, उत्तर, दक्षिण, पूरब पश्चिम, चार, छह, लेन वाली आधुनिकतम और पक्की सडकें, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, जिसमें हर गांव को पक्की सड़क से जोड़ने का उपक्रम है। ग्रामीण क्षेत्रों में स्वजल धारा से पेय जल की उपलब्धि, सर्व शिक्षा अभियान से प्राथमिक शिक्षा का प्रबंध, इत्यादि को गिना जा सकता है। अगर आज भारत विदेशी संस्थागत निवेशकों और बहुराष्ट्रीय निगमों के निवेश का पसंदीदा गंतव्य बना है, अगर आज भारत की अर्थव्यवस्था शक्तिशाली बनी है, आप स्वयं से पूछ लीजिए कि क्या यह छह साल के राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सरकार के बिना संभव होता! सिर्फ 15 साल पहले इसी शहर के हवाई अड्डे पर अमेरिकी विमान उतरे थे, उस स्वर्ण भण्डार को ले जाने के लिए, जो हमने विदेशी ऋण के बदले गिरवी रखे थे। हमारे शासन के दौरान स्थिति ठीक विपरीत हो गई। आज अमेरिकी प्रशासन भारत को स्वाभाविक मित्र मानता है। आज की कांग्रेस नेतृत्व वाली सरकार अमेरिका के सामने अनुनय विनय और चिरौरी करती नजर आती है। हम बराबरी के दर्जे से बर्ताव करते थे।

यू.पी.ए. का भारत के साथ विश्वासघात

कांग्रेस नेतृत्व की संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन की सरकार के साथ विडंबना यह है कि वह ऐसी आर्थिक नीतियों का अनुसरण कर रही है जिसने देश की विकास नीतियों को धीमा कर दिया है। और सामान्य लोगों पर तेजी से बोझ बढ़ा रही है। जैसाकि मैंने सितम्बर में चेन्नई में हुई राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में कहा था कि जो लोग आम आदमी का हाथ थामने की बात करते थे, वह आज आम लोगों को भूल गए हैं और खास आदमियों को अपनी अनुकम्पा से अनुग्रहित कर रहे हैं। इनमें समृद्ध व्यवसायी हैं, विदेशी बहुराष्ट्रीय निगम हैं, बड़े वित्तीय संस्थान और वो लोग हैं, जो देश की प्रगति को केवल शेयर बाजार के भावों में नापते हैं। संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन की सरकार सामान्य लोगों के साथ जुबानी सहानुभूति तो व्यक्त करती है, लेकिन 50 साल के कांग्रेस राज के बाद भी गरीबी रेखा के नीचे रहने वाले 30 प्रतिशत लोगों के लिए उनके पास कोई असली नीति नहीं है; उन 70 प्रतिशत लोगों के लिए भी, जो आज गांव में रहते हैं।

कृषि और सम्बद्ध क्रियाकलापों की स्थिति गहन चिंता का विषय बनी हुई है। सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में कृषि की हिस्सेदारी कुछ वर्षों से बराबर गिरती जा रही है किन्तु देश में कुल रोजगार में इसका हिस्सा अभी भी बहुत अधिक है। हमारी अधिकांश जनता अभी भी गांवों में रहती है और वे लोग अपनी जीविका के लिए खेती पर निर्भर रहते हैं। इसी पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए दसवीं पंचवर्षीय योजना में इसी क्षेत्र में सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि का चार प्रतिशत की दर से वार्षिक लक्ष्य रखा गया था। किन्तु इस क्षेत्र की बराबर उपेक्षा के चलते हमारा देश उस लक्ष्य को प्राप्त करने में असफल रहा है। दसवीं योजना के पहले तीन वर्षों में कृषि में वार्षिक वृद्धि की दर औसतन एक प्रतिशत रही है।

वास्तव में पशुधन और उपज क्षेत्र दोनों में मंदी का दौर चल रहा है। कृषि में निविष्टियों के उपयोग की दर भी घटी हैं। कृषि से होने वाली आय घट रही है। तिलहन, दालें, कपास और गन्ना जैसी नकदी फसलों की दर वहीं की वहीं है। इसके फलस्वरूप किसानों को बढ़ते कर्ज के बोझ से दबे रहकर आत्महत्या के लिए बाध्य होना पड़ रहा है। यही समय है जब हमे गम्भीर आत्मचिंतन करना चाहिए और अपने विकास के नक्शे पर पुनः दृष्टिपात करना चाहिए। जो व्यवस्था हमारी पचास प्रतिशत से अधिक जनता की अनदेखी करे, वह वास्तव में कोई आदर्श व्यवस्था नहीं है।

केवल गांव ही क्यों ? मुम्बई जैसे महानगर भी आज इन्हीं सरकारों की निर्मम अपेक्षा के शिकार हैं। इस जुलाई में ही हमने विनाशक बाढ़ से मुम्बई वालों को पीड़ित और भयाक्रांत देखा था। लेकिन पांच महीने गुजर जाने के बाद भी सरकार नागरिक सेवाओं में सुधार की योजना लाने में असफल रही है। यही कहानी सूचना प्रौद्योगिकी की भारतीय राजधानी बैंगलोर की है। इस बीच ईंधन की कीमतें तेजी से और लगातार बढ़ती जा रही हैं। इधर

वेतनभोगियों पर कर बढ़ाते हुए कठोर आघात किया जा रहा है। हम लोग अतिरिक्त शिक्षा शुल्क दे रहे हैं। दूसरी तरफ इससे अर्जित धन या तो अप्रयुक्त पड़ा है या फिर शिक्षकों के वेतन चुकाने में जा रहा है। जोकि इसका उद्देश्य नहीं था। सरकार विदेशी संस्थागत निवेशकों को शेयर बाजार में पैसा लगाने के लिए बधाई दे रही है। लेकिन सरकार यह अनुभव नहीं कर रही है कि विनिर्माण क्षेत्र की लगातार उपेक्षा का अर्थ है, नए रोजगार के अवसर न पैदा होना। न ही अर्थव्यवस्था के आधारभूत तत्व मजबूत हो रहे हैं। आज भारत प्रतिवर्ष पांच करोड़ टन इस्पात का उत्पादन करता है और चीन 30 करोड़ टन का।

यू.पी.ए. की दोषपूर्ण नीतियां

स्पष्ट है कि 19 महीने में नाममात्र की मनमोहन सिंह की सरकार और वास्तव में सोनिया गांधी की सरकार ने, वाजपेयी सरकार की बड़ी–बड़ी उपलब्धियों को बड़ी हद तक बिखेर दिया है। उसने हमारी सरकार की आणविक नीति की टिकाऊ स्थिति को अमेरिकी निर्देशों को मानकर विरल कर दिया है। तारापुर के ईंधन के कुछ काल्पनिक टनों के लिए इस सरकार ने भारत की उस आणविक शक्ति को गिरवी रख दिया, जिसे हमारी सरकार ने पोखरण विस्फोट से भारत को दिया था। और हमारे प्रधानमंत्री कहते हैं कि भारत अमेरिकी आणविक समझौते को सुनिश्चित पारस्परिकता के आधार पर क्रियान्वित किया जाएगा। अमेरिकी अधिकारियों ने इसे स्पष्ट कर दिया है कि अमेरिकी कांग्रेस तब तक इस समझौते पर सहमति प्रकट नहीं करेगी, जब तक भारत पहले उसका अनुपालन नहीं करेगा। दूसरे शब्दों में यह इस हाथ लेने और उस हाथ देने पर आधारित नहीं है जोकि पारस्परिकता का सीधा.साधा अर्थ है। इस नीति का अर्थ है कि 'हम देंगे और वो लेंगे'। हमारे पड़ोस में नेपाल सम्बन्धी सरकारी नीति असंगत है। इसने उन माओवादियों को प्रोत्साहित किया है जो सार्वजनिक रूप से भारतीय लोकतंत्र को ध्वस्त करने का संकल्प ले चुके हैं। बंगलादेश राइफल्स के मुखिया की मजाल देखिए कि वह दिल्ली आए और अपने देश में हुए विस्फोटों का दोष हम पर मढ़ गए। जबकि तथ्य यह है कि वह लाखों बंगलादेशियों की घुसपैठ भारत में करा रहे हैं और अपने देश में उत्तर–पूर्व के अलगाववादी तत्वों को पनाह दे रहे हैं। ऐसे घुसपैठिये भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए गम्भीर खतरा बने हुए हैं। क्योंकि वे पाकिस्तान की आई.एस.आई. के लिए सुरक्षित मुखौटे के रूप में काम करते हैं। सेक्युलरवाद की फर्जी चिंता में यू.पी.ए. सरकार ने बंगलादेश के घुसपैठियों को निकाल बाहर करने की हमारी शुरूआत के सभी रास्ते बंद कर दिए हैं। उल्टे जब सर्वोच्च न्यायालय ने असम में लागू आई.एम.डी.टी. एक्ट को निरस्त कर दिया तब प्रधानमंत्री ने मंत्रियों की एक कमेटी बना डाली जोकि घुसपैठियों के पक्षधर कानून को किसी दूसरे नाम के तहत जारी रखने के लिए नया कानूनी प्रावधान करेगी।

संप्रग सरकार : राजनीतिक नैतिकता का नितान्त अभाव

संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन सरकार आरंभ से ही जिस तरह की आन्तरिक खींचातानी, दबाव, कलाबाजी और भयावाह स्थितियों से घिरी रही है, उनके चलते कैसे आशा की जा सकती थी कि सत्तारूढ़ गठबंधन समरसता का उदाहरण प्रस्तुत करेगा। किन्तु विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र को चलाने वाली किसी भी सरकार से थोड़ी सी राजनीतिक नैतिकता की अपेक्षा तो अवश्य ही की जाती है। दुःख की बात है कि कांग्रेस के नेतृत्व में बनी सरकार इस न्यूनतम कसौटी पर भी खरी नहीं उतरी।

यह एक ऐसी सरकार है जिसके चार मंत्रियों को इसलिए निकाल बाहर करना पड़ा क्योंकि उन्हें अपराधकर्म में लिप्त पाया गया। दो मंत्रियों के विरूद्ध तो हत्या के आरोपों की वजह से गिरतारी वारंट जारी हुए। तीसरे पर 1984 के सिख–विराधी हत्याकाण्ड में शामिल होने का अभियोग लगा। इनके अतिरिक्त, एक अत्यंत महत्वाकांक्षी मंत्री को जिसके पास विदेश मंत्रालय जैसा महत्वपूर्ण विभाग था, इसलिए निष्कासित करना पड़ा क्योंकि उन्हें भ्रष्टाचार के ऐसे पाप का भागीदार पाया गया जिसका कोई पूर्व उदाहरण भारत के पास नहीं है।

इनमें से किसी भी मामले में प्रधानमंत्री ने सकारात्मक अथवा अनुकूल कार्यवाही नहीं की। कुछ मामलों में, शायद कुछ करना चाहते थे, किन्तु नहीं कर सके क्योंकि इस सरकार में वास्तविक शक्ति प्रधानमंत्री के हाथों में नहीं है। विपक्ष और लोकमत की दमदार आवाज ने उन्हें बाध्य कर दिया कि वे दागी मंत्रियों को अपनी सरकार से निकाल बाहर करें। भूतपूर्व विदेश मंत्री के मामले में दो तरह से निष्कासन हुआ– पहले तो उनसे उनका विभाग छीना गया और फिर उनको मंत्रीपद से हटाया गया। अब यह सभी जानते हैं कि न केवल नटवर सिंह जिन्हें मंत्रिमण्डल से धकियाते, चीखते–चिल्लाते हुए हटाया गया, बल्कि कांग्रेस पार्टी ने भी सद्दाम हुसैन की उदारता का लाभ उठाया। संचार माध्यमों द्वारा तो यह राशि 528 प्रतिशत करोड़ रूपये के लगभग बताई गई है जो कांग्रेस के किसी पदाधिकारी द्वारा बोफोर्स से कमीशन के रूप में प्राप्त की गई 64 करोड़ रूपये की रकम से कई गुना बड़ी है।

कांग्रेस पार्टी जिसने भारत में भ्रष्टाचार की संस्कृति का पालन–पोषण किया है, किंचित् मात्र भी लज्जित नहीं प्रतीत होती है। इसके विपरीत, यह सरकारी जांच एजेंसियों का निर्लज्जता से उपयोग करके उन लोगों पर से ध्यान हटाने की कोशिश कर रही है जिन्होंने असलियत में फायदा उठाया है। इससे साफ जाहिर है कि वे मात्र संदेशवाहक और कमीशन एजेंट के रूप में काम करने वाले नटवर सिंह को फांसी चढ़ाने और पार्टी अध्यक्ष सोनिया गांधी को किसी भी तरह पाक–साफ दिखाने के लिए कितने प्रतिबद्ध हैं।

श्रीमती सोनिया गांधी, कांग्रेस अध्यक्ष होने के नाते यह बहाना नहीं बना सकती हैं कि उन्हें इसकी जानकारी नहीं कि उनकी पार्टी ने सद्दाम की तेल–दलाली का फायदा उठाया है। क्योंकि वह जिस पार्टी की अध्यक्ष हैं उस पार्टी के विरूद्ध प्रत्यक्षतः मामला बनता है, इसलिए सोनिया गांधी को राष्ट्रीय सलाहकार परिषद के अध्यक्ष पद से हट जाना चाहिए। वोल्कर रिपोर्ट ने इस बात को और मजबूत किया है कि लोक–जीवन में ईमानदारी को कांग्रेस पार्टी कोई महत्व नहीं देती है। भारतीय जनता पार्टी के प्रत्येक सदस्य की आज यह जिम्मेदारी है कि बेशर्मी की इस कहानी को भारत के कोने–कोने में पहुंचाया जाए और लोगों को एकजुट किया जाए ताकि वे दोषियों से स्पष्टीकरण मांग सकें।

संयुक्त राष्ट्र संघ में वोल्कर रिपोर्ट पेश किए जाने के कुछ सप्ताह पहले ही, मित्रोखिन अभिलेखों के द्वितीय खण्ड से स्तब्ध कर देने वाले खुलासे सामने आए। इस प्रकाशन ने पूरी तरह से साबित कर दिया कि न केवल साम्यवादी (कम्युनिस्ट) बल्कि वरिष्ठ कांग्रेस नेतागण भी भूतपूर्व रूसी शासन की वेतनसूची में शामिल थे। देश के प्रति कम्युनिस्टों की निष्ठा सदैव संदेह के घेरे में थी क्योंकि उन्होंने 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन का विरोध किया था और 1962 में युद्ध के दौरान चीन का समर्थन किया था। लेकिन मित्रोखिन अभिलेख–II ने कांग्रेस की राष्ट्र के प्रति तथाकथित वचनबद्धता की कलई खोल दी है। इसने दिखा दिया है कि कांग्रेसी नेताओं को एक विदेशी ताकत के हितों की पूर्ति में कितनी आसानी से सहयोगी बनाया गया और उन्हें मुट्ठी–भर धन की खातिर अपने देश के महत्वपूर्ण गोपनीय दस्तावेज बेचने में कोई लज्जा नहीं आई।

भ्रष्टाचार का अंत करना है तो कांग्रेस को हटाओ

भारतीय जनता पार्टी की सदैव यह मान्यता रही है कि इस देश में भ्रष्टाचार की जड़ कांग्रेस और इस पर काबिज परिवार ने जमाई हैं। यद्यपि इसका अर्थ यह कतई नहीं है कि हाल ही में सांसदों को लेकर जो काण्ड उजागर हुआ है उसमें हमारे अपने कुछ सदस्यों की संलिप्तता को उचित ठहराया जाए, फिर भी इससे हमारी यह धारणा और मजबूत होती है कि जब तक कांग्रेस संस्कृति को हमारी प्रणाली से पूरी तरह नष्ट नहीं कर दिया जाता तब तक भ्रष्टाचार के विरूद्ध संघर्ष कभी सफल नहीं हो पाएगा। दूसरे शब्दों में यदि हमारे समाज से भ्रष्टाचार का समूल नाश करना है, तो कांग्रेस को सत्ता के हर स्तर से हटाना होगा। सत्ता भ्रष्ट बनाती है; सत्तारूढ़ कांग्रेस पूरी तरह भ्रष्ट कर देती है।

जनसंघ के समय से ही हमारी यह धारणा रही है कि राजनीति में भ्रष्टाचार की समस्या मात्र धनलिप्सा और लालच से ही नहीं उपजती है, जैसाकि अन्य क्षेत्रों में होता है, बल्कि इसका सीधा सम्बन्ध इस बात से भी है कि चुनावों का खर्च दिन–ब–दिन बढ़ता जा रहा है और यह कि अधिकतर राजनीतिक दल और उम्मीदवार इस स्थिति से निपटने में पहले से अधिक कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं।

1972 में, चुनाव कानून में संशोधन संबंधी एक संयुक्त संसदीय समिति का गठन किया गया था। श्री अटल बिहारी वाजपेयी और मुझे इस समिति में काम करने का अवसर मिला। हमने सरकारी खर्च से चुनाव कराने के पक्ष में जोरदार दलील दी। सिद्धांत रूप में इसे स्वीकार भी कर लिया गया, किन्तु सरकार का विचार था कि इससे सरकारी कोष पर भारी बोझ पड़ेगा। इससे सहमत न होते हुए श्री वाजपेयी और मैंने रिपार्ट में यह टिप्पणी दर्ज की:

> *''समिति ने सिद्धान्ततः यह स्वीकार करना उचित समझा है कि ''चुनाव सम्बन्धी सारे व्यय सरकारी कोष पर डालना विधिसम्मत होगा'' और यह कि ''वर्तमान में प्रत्याशी या राजनैतिक दल द्वारा वहन किए जा रहे चुनाव सम्बन्धी उचित व्यय को क्रमिक रूप से सरकार पर डाल दिया जाएगा।'' किन्तु इस क्रांतिकारी सिद्धांत को कार्यान्वित करने के लिए जिन उपायों की सिफारिश की गई है, वे कमजोर और विलंबकारी हैं। इस रोग के निदान के लिए कठोर सुधारों की आवश्यकता है। आधे–अधूरे उपायों से कुछ नहीं होगा। इस संदर्भ में, हमारा मानना है कि मान्यता–प्राप्त राजनीतिक दलों को आंशिक रूप से उनके पूर्व चुनावी*

प्रदर्शन के आधार पर और आंशिक चुनाव के बाद उनके वास्तविक चुनावी प्रदर्शन के आधार पर चुनाव अनुदान देने के प्रस्ताव पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है।''

हर्ष की बात है कि पिछले सप्ताह मंत्रिमण्डल ने चुनावों के लिए सरकारी धन मुहैय्या कराने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। मैं आग्रह करता हूं कि उस सम्बन्ध ने अविलंब एक व्यवहारिक कार्य–योजना बनाई जाए और कार्यान्वित की जाए।

राष्ट्र सर्वोपरि का अर्थ सुशासन

तर्क की दृष्टि से, एक सशक्त और सक्षम भारत का निर्माण करने के लिए भ्रष्टाचार का मुकाबला करना मात्र एक पहलू है। अन्य सभी नीतियों को राष्ट्र सर्वोपरि सिद्धांत के अन्तर्गत अनुकूल बनाना होगा। आप पूछ सकते हैं कि व्यवहार में राष्ट्र सर्वोपरि क्या अर्थ रखता है ? मैं चाहता हूं कि आप पीछे मुड़ कर उन सिद्धांतों पर दृष्टि डालें, जो सिद्धांत हम स्थापित करना चाहते थे, जब हम सत्ता में थे। जहां कहीं हमें शासन करने का अवसर मिलेगा, हमारे लिए राष्ट्र पहले का अर्थ होगा अच्छा प्रशासन। मैंने प्रायः कहा है कि कांग्रेस ने हमें स्वराज तो दिया, परन्तु सुराज कभी भी नहीं दिया। भारतीय जनता पार्टी सुराज के युग में कदम रखने के लिए प्रतिबद्ध है। अच्छा शासन अर्थात सुशासन, उस राम राज्य का समानार्थ है, जिसकी कल्पना गांधीजी ने की थी। अच्छा शासन वह माध्यम है, जिसके द्वारा हम राष्ट्र सर्वोपरि की धारणा को द्रष्टव्य वास्तविकता बना सकते हैं।

सुराज का सम्बन्ध केवल आर्थिक समृद्धि से नहीं है। सेंसेक्स में तेजी, विवाह–शादियों में तड़क–भड़क, कैसिनोज़ का खोला जाना आदि सामाजिक प्रगति के सूचक नहीं हैं। भारत की विभिन्नता वाले देश के लिए सुराज में सामाजिक सौहार्द और सम्बद्धता का होना आवश्यक है और इसीलिए भारतीय जनता पार्टी ने समरसता को अनिवार्य लक्ष्य के रूप में निरंतर आगे रखा है। वर्षों पहले हमने नारा दिया था, ''सबके लिए न्याय, तुष्टीकरण किसी का नहीं।'' वही हमारा आदर्श वाक्य है; भारतीय जनता पार्टी उसी दिन अपना निरालापन खो देगी जिस दिन यह वोट–बैंक की राजनीति के लालच में पड़ जाएगी। हालांकि हर दूसरा पक्ष सत्ता में आने के लिए अपने अदूरदर्शी लक्ष्य को सामने रख कर वोट–बैंक की राजनीति कर रहा है।

फूट डालने वाले कुचक्रों को विफल करें

हम अपनी पूरी ताकत से कांग्रेस और वामपंथियों के उन घृणित प्रयासों का बराबर विरोध करते रहेंगे जिनका सहारा लेकर वे भारत के लोगों को विभाजित करना चाहते हैं। हम अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय को किसी समुदाय विशेष के लिए आरक्षित संस्था में परिवर्तन करने का विरोध करेंगे। हम कांग्रेस के नेतृत्व वाली राज्य सरकारों द्वारा नौकरियों में अल्पसंख्यकों के लिए आरक्षण की चेष्टा को सफल नहीं होने देंगे। हम ऐसे सभी आयोगों के खिलाफ आंदोलन जारी रखेंगे, जिनका गठन केवल अल्पसंख्यकों के शैक्षिक और राजनीतिक हितों को प्रोत्साहन करने के लिए किया जाता है। हम दलितों और पिछडे वर्गों के लिए निजी कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में आरक्षणों के मामले में अल्पसंख्यकों संस्थाओं के लिए प्रस्तावित छूट का भी विरोध करेंगे। हम असम में आई.एम.डी.टी. एक्ट को किसी दूसरे नाम से दुबारा लाने के घृणित प्रयास का पुरजोर विरोध करेंगे। हम अवैध बंगलादेशियों की बराबर जारी घुसपैठ का निरन्तर विरोध करेंगे और उन्हें असहाय आर्थिक शरणार्थी के रूप में वर्णीकृत करने की चेष्टा को विफल कर देगें।

भारतीय जनता पार्टी जब कहती है कि राष्ट्र पहले, तो इसका अर्थ यह भी होता है कि राष्ट्रीय सुरक्षा को देश की कार्यसूची में सबसे ऊपर रखा जाए। संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन सरकार ने राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सरकार द्वारा राष्ट्र की सुरक्षा हेतु उठाए गए महत्वपूर्ण कदमों को क्रमिक रूप से निचले स्तर पर ला दिया है। इसके फलस्वरूप, नक्सलवादी बिहार में जहानाबाद को रौंद डालने, उच्च–सुरक्षा प्राप्त जेलों में घुसने, अपने सहयोगियों को मुक्त कराने और अपने विरोधियों, जिनकी बाद में हत्या कर दी जाती है, को अगवा कर ले जाने का दुस्साहस कर रहे हैं। यदि सरकार एक जेल की सुरक्षा नहीं कर सकती, जिसे राज्य की सत्ता का सबसे बड़ा प्रत्यक्ष प्रमाण कहा जाता है, तब वह सामान्य नागरिक को सुरक्षा की भावना कैसे प्रदान कर सकती है ? नेपाली माओवादियों को प्रोत्साहन देकर सरकार ने भारतीय माओवादियों को भारत के लगभग 600 जिलों में से 170 जिलों में अपनी ताकत बढ़ाने का अवसर दे दिया है। इस सरकार ने जम्मू व कश्मीर में भी सुरक्षा घटा दी है जिसके फलस्वरूप सीमा–पार से आतंकवादियों की घुसपैठ बढ़ गई है।

राजनीति का कांग्रेसीकरण

आजकल हम प्रायः सुनते हैं कि भारत की राजनीति का कांग्रेसीकरण हो गया है। कहा जाता है कि भारतीय जनता पार्टी भी कांग्रेसीकरण का शिकार हो गई है। यह ऐसा आरोप है जिसको एकदम नकारा नहीं जा सकता। शायद इसलिए कि पार्टी का विकास बहुत तेजी से होने के कारण कुछ ऐसे तत्व भी अन्दर आ गए हैं, जो कांग्रेस की भ्रष्ट नीतियों से प्रभावित हैं। इसके फलस्वरूप, भारतीय जनता पार्टी की विचारधारा के मूल–स्रोत ऐसे लोगों के लिए कोई बड़ा महत्व नहीं रखते हैं। इस बात को दोहराना आवश्यक हो गया है कि भारतीय जनता पार्टी एक सिद्धांतवादी संगठन है और इसे ऐसा ही रहना होगा। हम केवल सत्ता के लिए राजनीति में नहीं हैं; हम सत्ता इसलिए चाहते हैं, तकि हम एक सशक्त राष्ट्रवादी पारदर्शी और उत्तरदायी राजनीतिक लोकाचार को प्रोत्साहित कर सकें। पार्टी का दर्शन है– राष्ट्र पहले; और यह स्वप्न हमें जनसंघ से विरासत में मिला है। यह आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना कि उस समय था जब दीनदयाल उपाध्याय जी ने यह मंत्र हमें दिया। जो लोग स्वयं को अर्थात व्यक्ति को राष्ट्र के ऊपर मानते हैं, भारतीय जनता पार्टी में उनके लिए कोई स्थान नहीं हैं।

तथापि सरकार की राजनीतिक अनैतिकता उस संदेहपूर्ण प्रक्रिया तक ही सीमित नहीं है जिसके द्वारा उन्होंने दागी मंत्रियों को बचाने की कोशिश की गई। कांग्रेस पार्टी ने गोवा में भारतीय जनता पार्टी की सरकार को गिराने और अपनी अवैध सरकार को सिंहासन पर बिठाने के लिए गलत हथकंडे इस्तेमाल किए। झारखण्ड में तो यह उस हद से भी आगे बढ़ गई। इसने लोगों के निर्णय को नकार कर हारने वाले को विजेता बनाने को प्रयास किया। बिहार में, इसने सभी सिद्धांतों को हवा में उड़ा दिया और नव–निवार्चित विधान सभा को भंग करा दिया क्योंकि लोगों ने व्यापक रूप से बदनाम ऐसे शासन को जनादेश देने से इंकार कर दिया जिसमें कांग्रेस साझेदार थी, जिसने राज्य को 'जंगल राज' में बदल डाला था।

ध्यान देने योग्य बात यह है कि इन तीनों राज्यों अर्थात गोवा, झारखण्ड और बिहार में संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन ने लोकतंत्र की हत्या करने के इरादे से मनचाहे राज्यपालों का उपयोग किया। झारखण्ड में न्यायिक हस्तक्षेप से ही लोकतंत्र को बचाया जा सका। बिहार में उच्चतम न्यायालय ने राज्य विधान सभा को भंग किए जाने की कार्रवाई को असंवैधानिक करार दिया।

मित्रो, संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन सरकार जिस तरह एक के बाद एक गलतियां कर रही है, जैसे–जैसे यह अपनी कारगुजारी से आम आदमी को निराश कर रही है, जिसका नाम लेकर इसने 2004 में जनादेश लिया था; जैसे–जैसे इसके पूरे न किए गए और गलत ढ़ंग से पूरे किये गए वायदों की सूची लम्बी हो रही है; और जैसे–जैसे ही नए–नए तथ्य और अधिक काले कारनामे इसकी राजनीतिक आंतरिकता के खाते में जुडते जा रहे हैं, उन्हें देखते हुए जैसाकि मैं पहले कह चुका हूं जरा भी संदेह नहीं कि लोग एक बार फिर विकल्प तलाशेंगे। और लोग पुनः भारतीय जनता पार्टी को ही अपना विकल्प चुनेंगे। कांग्रेस और कम्युनिस्टों से निराशा व्यापक रूप से उनके खिलाफ मतदान का कारण बनेगी। किन्तु वही पर्याप्त नहीं है। हम चाहेंगे कि लोग भारतीय जनता पार्टी को एक वास्तविक विश्वसनीय और बहुत ही बेहतर विकल्प के रूप में देखें। जिसका मतलब है कि हमें भारतीय जनता पार्टी के पक्ष में एक सकारात्मक विकल्प चुनने की समानान्तर लहर को गति देनी चाहिए। हमें नहीं भूलना चाहिए कि 1996, 1998 और 1999 में लोगों ने हमारे लिए इसी तरह मतदान किया था। उन्होंने हमें एक ऐसी पार्टी के रूप में देखा, जो सुशासन और विकास के लिए लड़ रही है।

बिहार से गठबंधन धर्म को बढ़ावा

सत्ता में लौटने पर भारतीय जनता पार्टी उन सभी कदमों को उलटने के लिए कटिबद्ध है, जिन्हें संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन द्वारा भारत की सुरक्षा के कवच को कमजोर करने के लिए अपनाया गया है। बिहार में हमारी आश्चर्यजनक जीत से स्पष्ट हो गया है कि लोग कांग्रेस एवं उसकी सहयोगी पार्टियों के कुशासन से तंग आ चुके हैं। बिहार के नतीजों ने राष्ट्र के सिंहासन पर राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की निश्चित वापसी का रास्ता साफ कर दिया है। हमें इस अवश्यंभावी स्थिति के लिए तैयारी करनी है क्योंकि संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन सरकार अपने ही अंतर्निहित आन्तरिक अन्तर्विरोधों के कारण हमारी आशा से पहले ही गिर सकती है। मित्रो, जब ऐसा हो तो लोगों को यह नहीं लगना चाहिए कि हम तैयार नहीं हैं।

अब यहां मैं गठबंधन धर्म के महत्व को हृदयंगम करने पर जोर देना चाहूंगा ताकि राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन को न केवल बचाए रखा जाए बल्कि आगे बढ़ाया जाए। भाजपा न केवल उसका नेतृत्व है, बल्कि एक नैतिक बल भी है

जिससे सम्बंधित क्षेत्रीय दलों को मिलाकर राष्ट्रीय गठबंधन बने हैं। राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के सफल प्रयोग ने राज्यों के हमारे साथी दलों को एक राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य दिया है। सबका मिलकर एक राष्ट्रीय मिशन भी बना। आज के इस गठबंधन युग में यह आवश्यक है कि राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन अपनी एकजुटता बनाए रखे। भारतीय जनता पार्टी अपने वैचारिक कार्यक्रमों से प्रतिबद्ध है। मित्रो, 1951 से 1971 तक जनसंघ सामान्यतयः अकेला चला था। हमने दूसरे दलों के साथ विलय करने के विचार से इनकार किया और अपनी शुद्धता बनाए रखने पर जोर दिया। 1972 में जयप्रकाश नारायण ने हमें पुनर्विचार के लिए प्रेरित किया क्योंकि उन्होंने राष्ट्र के ऊपर मंडराते खतरों को देखा। वह यह सत्य कि कांग्रेस भ्रष्टाचार का मूल स्रोत है, और इससे अधिनायकवाद के काले बादल बढ़ते चले आ रहे हैं। उन्होंने एक विचार दिया वह यह कि विचारधारा महत्वपूर्ण होती है लेकिन कुछ खास स्थितियों में उदारवाद को प्राथमिकता देनी चाहिए। इस तरह हम लोग भ्रष्टाचार के विरोध में और गरीबी उन्मूलन के मंच पर एक साथ आए। इस गठबंधन ने संयुक्त रूप से आपातकाल को पराजित किया और 1977 में सत्ता में आया। अगर हम पीछे मुड़कर देखें तो हम पाएंगे कि भारतीय जनता पार्टी इससे सबसे ज्यादा लाभान्वित हुई। मात्र 20 वर्ष पूर्व जनता पार्टी के प्रयोग के असफल होने के बाद भारतीय जनता पार्टी ने ही कांग्रेस विरोधी मोर्चे का सत्ता में नेतृत्व किया।

भारतीय जनता पार्टी ने द्विध्रुवीय राजनीति की नींव रखी

वास्तव में इन वर्षों में भारतीय जनता पार्टी को सबसे बड़ी सफलता भारतीय राजनीति को द्विध्रुवीय बनाने में मिली। हमारी विशिष्ट विचारधारा और आदर्शवाद ने हमारे विरोधियों को एक साथ इकट्ठा कर दिया ताकि वह हमें सत्ता में आने से रोक सकें। वरना इस हास्यास्पद परिदृश्य का क्या स्पस्टीकरण है कि कांग्रेस और वाममोर्चा दिल्ली में संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन चला रहे हैं और पश्चिम बंगाल व केरल में एक दूसरे की पीठ में छुरा घोंप रहे हैं। क्या इन राज्यों में कांग्रेस की विपक्ष के नाते कोई विश्वसनीयता है ? इन राज्यों में हर आदमी जानता है कि कांग्रेस मार्क्सवादियों की 'बी' टीम है। जहां तक मार्क्सवादियों का सवाल है, वह दिल्ली में गुर्राते हैं मगर काटने की सिर्फ धमकी देते हैं। हर व्यक्ति जानता है कि वो काटने में सक्षम नहीं हैं। देश की राजनीति में उनका एकमात्र निर्देशक सिद्धांत भारतीय जनता पार्टी विरोधवाद है। आज का परिदृश्य हमारे लिए महान अवसर है कि हम अपने परम्परागत प्रभाव क्षेत्र से बाहर अपनी शक्ति बढ़ाएं। दक्षिण और पूर्व में हम जल्दी ही अधिक शक्तिशाली रूप में उभरेंगे। इस अधिवेशन में हमें संकल्प लेना है कि हम भारत भर में अपनी उपस्थिति प्रभावी रूप से दर्ज करेंगे; उन राज्यों में भी, जहां अब तक ठोस आधार भूमि नहीं बना सके हैं। हम लोगों को पश्चिम बंगाल, असम, केरल और तमिलनाडु के आने वाले विधानसभाई चुनावों में अपनी पूरी शक्ति लगा देनी है। और इन राज्यों में आगे बढ़ने को प्राथमिकता देते हुए जुटना है।

गुजरात रास्ता दिखा रहा है

इस संदर्भ में गुजरात का उदाहरण इस बात पर जोर देने के लिए देना चाहूंगा कि पूरे देश के सामने एक ईमानदार और विकास के प्रति सन्नद्ध भारतीय जनता पार्टी की आदर्श सरकार कैसी होती है। इतिहास में शायद ही कभी कोई सरकार हुई हो जिसके नेता को मीडिया, राजनीतिक दलों और विदेशी तत्वों ने इतनी बेदर्दी से बदनाम किया हो, जितना गुजरात के श्री नरेंद्र मोदी को। ऐसे सभी हमलों का प्रतिकार करते हुए उससे ऊपर उठकर मोदी ने अपने पारदर्शितापूर्ण ईमानदार और प्रभावी सरकार देकर दैदीत्यमान उदाहरण प्रस्तुत किया। गुजरात की जनता ने हाल के महीनों में हुए चुनावों में भारी समर्थन देकर उत्साहपूर्वक उनका समर्थन किया। गुजरात की सरकार ने जनता की आकांक्षाओं को सफलतापूर्वक वास्तविकता में बदल डाला। श्री मोदी अपनी उपलब्धियों के लिए भरपूर अभिनंदन के अधिकारी हैं ।

आबादी नियंत्रण और पर्यावरण संरक्षण

भारतीय जनता पार्टी को, आने वाले वर्षों में, सभी राज्यों जहां हम सत्ता में अकेले हैं या गठबंधन के साथ हैं, में सुशासन देने के माध्यम से राष्ट्र का एजेण्डा भी निर्धारित करने हेतु प्रयासरत रहना होगा। हमें लोगों के सामने अपने आप ही ऐसे मापदण्ड पेश करने चाहिए जिससे लोग विश्वास करें कि केवल भारतीय जनता पार्टी ही देश को भव्य लक्ष्य की ओर ले जा सकती है। यह सच है कि जब तक आबादी की भारी बढ़ोत्तरी नहीं रोकी जा सकेगी तब तक विकास के फल बिखरते रहेंगे। हम लोगों को अपनी जगह पर खडे. रहने के लिए ही तेज और ज्यादा तेज गति से दौड़ना होगा। यह एक चिंतित कर देने वाली वास्तविकता है कि अगले 25 वर्षों में भारत चीन को पीछे

छोड़ कर विश्व का सबसे ज्यादा जनसंख्या वाला देश बन जाएगा। आपातकाल में आबादी नियंत्रण के जो अतिवादी कदम उठाए गए, उससे आबादी नियंत्रण एक तिरस्करणीय शब्द बन गया और कोई भी राजनैतिक दल साहसपूर्वक इस मुद्दे पर कदम उठाने को तैयार प्रतीत नहीं होता। लेकिन हम लोग हमेशा के लिए सिर बालू में नहीं डाल खड़े रह सकते। कम से कम भारतीय जनता पार्टी को तो इन राज्यों में, जहां वह सत्ता में है, इस दिशा में कदम बढ़ाने चाहिए और राष्ट्रीय स्वीकार्यता हासिल करनी चाहिए। पंचायत और नगर पालिका चुनाव लड़ने की अर्हता के रूप में परिवार के आकार का एक उपबंध डालकर इसकी शुरूआत की गई थी। अनेक राज्यों में ऐसे नियम बनाए गए, जिनके दो से ज्यादा बच्चे हैं, उन्हें उम्मीदवार नियमतः न होने दें। मुझे बताया गया है कि इस पर भारी विरोध है कि यह कानून संसद और विधानसभा की सदस्यता के लिए नहीं है। वास्तव में यह एक तार्किक विसंगति है। मैं सोचता हूं कि इस हतोत्साहक नियम को सब पर लागू होना चाहिए। निवार्चन नियमों के अंतर्गत पंचायत से लेकर ऊपर तक सभी विधायी सदनों में प्रत्याशियों की उम्मीदवारी स्वीकार नहीं की जानी चाहिए जिनके दो से ज्यादा बच्चे हैं। एक ऐसी निर्धारित समय–सीमा पर बहुत सावधानी से सभी पक्षों की सहमति ली जानी चाहिए ताकि किसी की उम्मीदवारी को अनुचित ढ़ंग से नकारा न जा सके। लेकिन जब तक हम इस सम्बंध में आम सहमति की तरफ नहीं बढ़ते, तब तक इसे लागू नहीं किया जा सकेगा। मैं भाजपा की राज्य सरकारों से इस मुद्दे पर नए सिरे से विचार करने और उचित नीतियों के निर्धारण की अपील करता हूं ताकि आबादी की अतिवृद्धि को हतोत्साहित किया जा सके। हमें आबादी की निर्बाध बढ़ोत्तरी को रोकने के लिए ऐसी जन–जागृति पैदा करनी होगी जिससे कोई भी निर्णय थोपा हुआ न लगे बल्कि सामाजिक आवश्यकता नजर आए। इसी तरह हम लोगों को पर्यावरण की रक्षा के सिलसिले में, लोगों को जागृत करने के सिलसिले में, लोगों की अगुवाई करनी चाहिए। आबादी की बढ़ोतरी मौजूदा दर जमीन पर भारी है तो दूसरे प्राकृतिक संसाधन भी बहुत सीमित हैं। वे भी असह्य हो जाएंगे। जैसाकि आप सब लोग जानते हैं कि भारत के बहुत से भागों में भू जल स्तर नीचे जा रहा है। देश में जंगल भी घटते जा रहे हैं। उसका वर्षा पर असर होने लगा है। पारिस्थितिकीय संतुलन भी बिगड़ रहा है। वन्य जीवों और जैविक विविधताओं पर भी इसका दुष्प्रभाव पड़ रहा है। ये ऐसे मुद्दे हैं, जिन्हें केवल स्वयंसेवी संस्थाओं पर नहीं छोड़ा जा सकता । इनमें से कई स्वयंसेवी संस्थाएं संदिग्ध चरित्र वाली हैं। मैं ऐसा सोचता हूं कि इन मुद्दों को भी भारतीय राजनीति की चिंता का विषय समझना चाहिए और भाजपा को तो इस दिशा में आगे बढ़ना ही चाहिए। यह अनुभव करना चाहिए कि आम जन–जीवन की खुशहाली केवल प्रति व्यक्ति आय या औद्योगिक उत्पादन से नहीं नापी जा सकती। हम भारत के विकसित और महान होने की बात कहते हैं तो हमारे लिए यह भी जरूरी है कि हम अपनी आगे की पीढ़ियों के जीवन की गुणवत्ता का ख्याल रखें।

भव्य भविष्य

25 वर्ष की आयु में ब्रह्मचर्य आश्रम से बढ़कर गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करते हैं। गृहस्थ का अर्थ है जिम्मेदारी स्वीकार करना और साथ.साथ परिपक्वता। हम लोग भाजपा के मुम्बई महाधिवेशन में इस संक्रमण को पार करेंगे। हम लोगों को भ्रष्ट कांग्रेस संस्कृति की निंदनीय परम्परा का अनुसरण करने वाले कुछ सदस्यों की कष्टदायक गिरावट को उलट देना है। निश्चय ही उनकी संख्या नगण्य है और जब तक हम इस प्रवृति को पूरी तरह रोकने का संकल्प न लेंगे, हम लोग अपने को एक अलग तरह की पार्टी बताने का गर्व नहीं कर सकेंगे। भाजपा का अतीत गौरवमय रहा है। लेकिन भव्य भविष्य हमारी प्रतीक्षा कर रहा है। हमें इस क्षण का पूरी प्रतिबद्धता से उपयोग करना है, हम लोग इस राष्ट्र को महाशक्ति बनाने के राष्ट्रीय उपकरण हैं। हम लोग अपने सौ करोड़ देशवासियों को निराश नहीं करेंगे।

Hkkjr ekrk dh t;A oUns ekrjeA